# बहुआयामी राजस्थान

सम्पादक
डॉ. सुरेश चन्द्र जाट
डॉ. अमित कुमार रैंकवार

Scanned with CamScanner

# बहुआयामी

# राजस्थान

*सम्पादक*

डॉ. सुरेश चन्द्र जाट

डॉ. अमित कुमार रैंकवार

इण्डियन पब्लिशिंग हाउस

जयपुर

Scanned with CamScanner

पुस्तक के लेखन एवं प्रकाशन में यद्यपि पूर्ण सावधानी बरती गई है, फिर भी पुस्तक में प्रस्तुत तथ्यों एवं आँकड़ों में रह गयी त्रुटियों के लिए सम्पादकगण व प्रकाशक उत्तरदायी नहीं हैं।

ISBN 81-8289-010-1

प्रथम संस्करण : 2021

© सम्पादकगण

❑

मूल्य : ₹ 650

❑

*प्रकाशक*

**इण्डियन पब्लिशिंग हाउस**

852, महावीर नगर, टोंक रोड़

जयपुर-302 018

फोन : 0141-2721417

ई-मेल : iphbooks852@gmail.com

❑

*टाइप सैटिंग*

नेशनल कम्प्यूटर्स, जयपुर

❑

*मुद्रक*

विशाल कौशिक प्रिन्टर्स, दिल्ली

Scanned with CamScanner

# अनुक्रमणिका


| | | |
|---|---|---|
| 1 | बहुआयामी राजस्थान<br>*डॉ. सुरेन्द्र डी. सोनी* | 1 |
| 2 | मेवाड़ के जलाशय एवं स्थापत्य कला<br>*डॉ. अमित कुमार रैंकवार* | 10 |
| 3 | वर्तमान संदर्भ में लोकतांत्रिक विकेंद्रीकरण और पंचायतों की भूमिका<br>*डॉ. सीताराम चौधरी* | 20 |
| 4 | राजस्थान में हेरिटेज होटल परम्परा : प्राचीन गौरव के पुनर्स्थापन का पर्यटन-प्रयास<br>*डॉ. प्रतिभा* | 32 |
| 5 | राजस्थान की घासें<br>*जितेन्द्र कुमार रैंकवार* | 41 |
| 6 | राजस्थान में मरुस्थलीकरण के प्रतिमान<br>*डॉ. राकेश कुमार शर्मा* | 51 |
| 7 | साहित्यिक स्त्रोतों में परिलक्षित राजस्थान का स्वतंत्रता संग्राम<br>*डॉ. अमित कुमार रैंकवार* | 60 |
| 8 | राजस्थान के जन आन्दोलनों में राष्ट्रवादी काव्य रचनाओं की भूमिका : एक अध्ययन<br>*डॉ. रश्मि मीना* | 68 |
| 9 | गुरुनानक की राजस्थान यात्रा<br>*डॉ. सुखवीर कौर* | 81 |
| 10 | राजस्थान में जनजातीय विकास कार्यक्रम<br>*सेडूराम रावत* | 91 |


Scanned with CamScanner

# राजस्थान में हेरिटेज होटल परम्परा : प्राचीन गौरव के पुनर्स्थापन का पर्यटन-प्रयास

डॉ. प्रतिभा

ठहराव, भोजन तथा अन्य आवश्यक और आरामजन्य सुविधाओं से युक्त होटल अपने आगन्तुकों को आराम तथा सुकून के पल उपलब्ध कराते हैं। जहाँ आज भारत के शहरी परिवेश एवं संस्कृति में होटल तथा रिसॉर्ट मूलतः उन यात्रियों, पर्यटकों तथा सैलानियों को आवासीय व्यवस्था उपलब्ध कराते हैं, जिन्हें अपनी यात्राओं के दौरान घर से बाहर रहना और रुकना पड़ता है। जहाँ लक्जरी अथवा सितारा होटल उच्च कोटिक आधारित ढाँचे के साथ विश्वस्तरीय सुविधाओं तथा अन्य वांछित सेवाओं को प्रदान कर उच्च वर्गीय पर्यटकों के लिए अद्‌भुत वातावरण का सृजन करते हैं, वहीं बजट होटल आरामदायक ठहराव, आधुनिक आवश्यक सुविधाओं तथा अच्छी सेवाओं के द्वारा प्रत्येक वर्ग तक अपनी पहुँच सुनिश्चित करते हैं। इसी तरह बहुत से रिजार्ट्स हिल स्टेशनों, समुद्र तटों तथा अन्य प्राकृतिक पर्यटन-स्थलों पर पर्यटकों को आरामदायक सेवाएँ उपलब्ध कराते हैं।

इसी सन्दर्भ में हेरिटेज होटल ने आधुनिक पर्यटन के अभिन्न अंग के रूप में अपनी उपस्थिति दर्ज करायी है। पर्यटन-गतिविधि के महत्त्वपूर्ण आयाम के रूप में उभरे हेरिटेज होटलों ने पर्यटकों को शाही निवास-स्थलों की भव्यता को अनुभूत करने का सुखद अवसर प्रदान करके पर्यटन-उद्योग को नई आभा प्रदान की है। हेरिटेज होटल क्या हैं? वस्तुतः वर्तमान में रिहाइश अथवा निवास के उपयोग में नहीं आ रही कोर्ट, कैसल, महल तथा हवेलियों जैसी विशिष्ट वास्तुकला की हेरिटेज सम्पत्तियों को परिवर्तित कर निर्मित किए गए पर्यटक आवासों को ही 'हेरिटेज होटल' की संज्ञा दी जाती है। चूंकि इन इमारतों का कोई उपयोग नहीं हो रहा था, और साथ ही इनके रखरखाव पर खर्च भी बहुत होता है तो पर्यटक आवास के रूप में इन्हें परिवर्तित कर द्विआयामी लाभ प्राप्त किए गए। एक ओर पर्यटकों को राजसी जीवन व्यतीत करने का रोमांच मिला, वहीं दूसरी ओर उपयोग में न आ रही इन इमारतों के समुचित उपयोग एवं रखरखाव को कर पाना भी आसान हो गया। इस प्रकार जहाँ स्मारकों की सुरक्षा सुनिश्चित कर

Scanned with CamScanner

उन्हें पुनर्जीवन दिया जाना संभव हो सका, वहीं रोजगार-सृजन सहित अन्य आर्थिक लाभ भी इससे प्राप्त हो सके।

सामान्य होटलों की तुलना में हेरिटेज होटलों का उद्‌भव परिवर्तन की एक बयार के रूप में हुआ, क्योंकि हेरिटेज होटल स्वयं में एक इतिहास समेटे होते हैं और इसी गरिमामय इतिहास तथा सांस्कृतिक विरासत का अनुभव करने के लिए पर्यटक इनमें ठहरते हैं। बहुत सी वे सुविधाएँ, जो अन्य होटलों में निर्मित की जाती हैं, यहाँ पहले से उपलब्ध होती हैं। एक प्रकार से यह इनकी पूर्वार्जित साख अथवा ब्रान्डिंग कही जा सकती है। संभवतः इसी कारण प्रतिष्ठित होटल-समूह नए होटल खोलने के साथ ही हेरिटेज सम्पत्तियों को होटल के रूप में प्रस्तुत करने में पर्याप्त रुचि दिखाते हैं।

हेरिटेज होटलों के लिए तय किए गए मूलभूत मापदंडों के अनुसार चिह्नित स्थल की आकृति, स्थापत्य एवं निर्माण पद्धति में परम्परा एवं संस्कृति प्रतिध्वनित होनी चाहिए। वहाँ की साज-सज्जा एवं फर्नीचर आदि में भी उसकी झलक हो। सार्वजनिक कक्षों एवं अतिथि कक्षों जैसी मूलभूत सुविधाओं के साथ-साथ स्वागत कक्ष, भोजन-कक्ष, रसोई, उद्यान, टेलीफोन सुविधा तथा चिकित्सा सुविधा आदि भी अपेक्षित हैं। साथ ही सबसे महत्त्वपूर्ण है कि होटल के रूप में विकसित की जा रही इमारत की विरासतीय मूल विशेषताओं को पूर्ण रूप से सुरक्षित रखा जाए और कोई भी जरूरी परिवर्तन अथवा विस्तार उसकी पारम्परिक विशेषताओं को ध्यान में रखते हुए ही होना चाहिए। हेरिटेज होटल से यह भी अपेक्षा है कि वह अपने आप में अनूठा हो और स्थानीय पारम्परिक जीवन-पद्धति के अनुरूप हो। इसकी सेवा, परिवेश एवं अन्य सुविधाएँ भी उच्च स्तर की होनी चाहिए।

## इतिहास एवं पृष्ठभूमि

ऐतिहासिक दृष्टि से देखा जाए तो विरासत होटल की अवधारणा एकदम नई नहीं है। फ्रांस में रेलैसिस एट शैटेक्स होटल शृंखला, ब्रिटेन में छोटे लक्जरी होटलों की शृंखला, स्पैनिश पैरेडोरेस और अन्य होटल ऐतिहासिक सम्पदाओं के ही बदले हुए रूप हैं। इस प्रकार के होटलों में दम्पति, परिवार और मित्रों का छोटा समूह ही आकर ठहरता है। इस प्रकार के होटलों में एक साथ ज्यादा पर्यटकों को ठहरने की सुविधा नहीं है। इसका यह उद्‌देश्य भी नहीं है। इनका निर्माण विशेष रुचि के पर्यटकों को ध्यान में रखकर ही किया गया है।

भारत में भी 20वीं शती के पूर्वार्द्ध में अवधारणा के रूप में हेरिटेज होटल के विकास के साक्ष्य प्राप्त होने लगते हैं। हेरिटेज सम्पत्तियों की अधिकारता के कारण स्वाभाविक रूप से इसका श्रेय राजस्थान को ही है। राजस्थान में इस प्रकार का प्रथम उदाहरण भरतपुर में प्राप्त होता है जहाँ घना पक्षी विहार में महाराज केशोदेव सिंह जी ने अपने विहार महल को विशिष्ट अतिथियों की आवभगत के लिए एक सर्वसुविधायुक्त

Scanned with CamScanner

आधुनिक अतिथि भवन (गेस्ट हाउस) में परिवर्तित कर दिया था। इस रूप में उसका नाम भरतपुर लॉज ही रख दिया गया था। समय-समय पर ब्रिटिश अधिकारी व उनके परिवारों का आतिथ्य यहाँ किया जाता था। इस भवन की निर्माण कला तथा साज-सज्जा राजस्थानी राजप्रासाद की भांति थी तो इसकी प्रशासनिक व्यवस्थाएँ व सुविधाएँ आधुनिक आवश्यकताओं के अनुरूप ब्रिटिश प्रतिनिधियों द्वारा की जाती थीं। भविष्य के हेरिटेज होटल के स्वरूप व कार्य-व्यवस्थाओं के निर्धारण में प्रायः इसी व्यवस्था का अनुगमन किया गया।

1929 में महाराज जयसिंह ने जयपुर में जयमहल के कुछ भाग को जय क्लब के परिसर के रूप में संग्रहालय व सामाजिक कार्यों हेतु संगठन के लिए अनुमति दी, जिसे आगे चलकर टाटा समूह के ताजमहल होटल श्रृंखला द्वारा पूरा खरीदकर पाँच सितारा हेरिटेज होटल का स्वरूप दिया गया। जयमहल पैलेस के परिसर में सैलानियों के लिए चलाए जाने वाली रेलगाड़ी आकर्षण का केन्द्र थी।

1947 में भारत के स्वतंत्र राष्ट्र के रूप में अवतरित होने और 1950 में जागीरदारी व्यवस्था की समाप्ति के बाद बहुत सी देशी रियासतों के भूतपूर्व राजाओं और सामन्तों आदि के समक्ष आजीविका का प्रश्न खड़ा हो गया। इन रियासतों से जुड़े बड़े-बड़े राजप्रासादों तथा हवेलियों के रखरखाव और देखभाल के बड़े-बड़े व्यय की व्यवस्था कर पाना उनके लिए कठिन हो गया। आगे चलकर 1970 में प्रिवीपर्स की समाप्ति जैसे कानूनों से पूर्व राजाओं के सभी विशेषाधिकारों को समाप्त करने से स्थितियाँ और कठिन हो गयीं। इन रियासतों से जुड़े विरासतीय स्मारक भी समुचित रख-रखाव के अभाव में जर्जर होते जा रहे थे।

ऐसे में जहाँ कुछ पूर्व राजाओं ने अपनी प्रतिष्ठा का प्रश्न बनाते हुए अपने राज-निवासों को वैसे ही रहने दिया, वहीं कुछ शासकों ने दूरदर्शिता दिखाते हुए इन स्मारकों के रचनात्मक उपयोग को प्राथमिकता दी।

1950 तक बीकानेर स्थित शीशमहल (जूनागढ़) और गढ़ी महल के साथ-साथ शेखावाटी स्थित राजराजेश्वर श्री गोपालराव का राजप्रासाद भी तीन सितारा होटल श्रेणी के समकक्ष हेरिटेज होटल में परिवर्तित हो चुके थे। इन सभी परिसरों का आंशिक भाग वास्तविक मालिकों के पास रहा तथा अधिकांश भाग होटल व संग्रहालय परिसर के रूप में बदल दिया गया। इन परिसरों में पहले जहाँ सरकारी मेहमान ही आया-जाया करते थे, अब आम विदेशी पर्यटक आकर राजसी ठाठ-बाट और शानो-शौकत का अनुभव कर 'ब्रिटिश राज' की कुछ झलक प्राप्त कर सकते थे। शनैः-शनैः इनकी माँग बढ़ने लगी और विदेशी पर्यटकों के कारण ये आय का भी प्रमुख स्रोत बनने लगे।

धीरे-धीरे अन्य महलों, गढ़ियों व हवेलियों के मालिकों ने इसी उदाहरण को अपनाते हुए अपनी सम्पत्तियों को होटल समूहों को बेचने, लीज पर देने अथवा अनुबंध के

Scanned with CamScanner

आधार पर भागीदारी के आधार पर क्रियान्वयन हेतु देना प्रारम्भ कर दिया। 1960 तक 20 छोटे-बड़े महलों को हेरिटेज होटल में बदला जा चुका था।

सरकार द्वारा नियमन-प्रक्रिया में लचीलापन लाये जाने तथा राजपरिवारों व केन्द्रीय सरकारों के मध्य रिश्तों में सुधार से भी इनकी संख्या में वृद्धि हुई। 1980 में तंत्रात्मक नियोजन एवं 7वीं, 8वीं पंचवर्षीय योजनाओं में पर्यटन को पर्याप्त महत्त्व किए जाने के कारण भी बहुत से अन्य महल तथा हेरिटेज होटलों में परिवर्तित किये गये। परिणामस्वरूप सन् 2000 तक मान्यता प्राप्त सक्रिय होटलों की संख्या 39 तक पहुँच गयी, जिनमें 1069 अतिथि-कक्षों की व्यवस्था पर्यटकों के लिए थी। जयपुर के व्यावहारिक व दूरदर्शी महाराजा मानसिंह द्वितीय (1922-1946) पहले ऐसे बड़े राजा थे जो सक्रिय होटल मालिक बने। उन्होंने सपरिवार अपने आलीशान आवास रामबाग पैलेस से अपेक्षाकृत छोटे आवास ब्रिटिश रेजीडेन्ट आवास में आकर रहना तय किया और 1957 से औपचारिक रूप से रामबाग राजमहल होटल प्रारम्भ हो गया। 1969 में हुए विस्तार के बाद यहाँ अतिथि-कक्षों की संख्या 3 से बढ़ाकर 26 कर दी गई और 1972 में ताज समूह होटल प्रबन्धन ने इसे अपनी देख-रेख में ले लिया।

उदयपुर राजघराने ने भी समय के साथ चलते हुए 1961 ई. में पिछोला झील में स्थित जगनिवास को लेक पैलेस हेरिटेज होटल के रूप में परिवर्तित किया।

1971 में ताज समूह द्वारा इसका प्रबंधन अपने हाथ में ले लेने के बाद इस जर्जरित उद्यान महल को पुनरुद्धार के द्वारा एक शानदार होटल में परिवर्तित कर दिया गया। आगे के जर्जर महल का रचनात्मक उपयोग न हो पाने के कारण महल के पीछे के हिस्से का उपयोग करके पर्यटकों को अकल्पनीय रोमांच उपलब्ध कराया गया।

विरासतीय महत्त्व की दृष्टि से देखें तो नीमराणा फोर्ट पैलेस को राजस्थान ही नहीं, भारत की भी सबसे पुरानी विरासत स्मारक होने का श्रेय है, जिसे होटल के रूप में परिवर्तित किया गया। 1464 ई. में निर्मित और 1990 ई. में जीर्णोद्धृत यह स्मारक भारत के सुन्दरतम और व्यस्ततम हेरिटेज होटलों में से एक है क्योंकि नई दिल्ली से राजस्थान का निकटतम स्थल होने के साथ साथ यह दिल्ली-जयपुर हाइवे के एकदम निकट है।

इस प्रकार स्थानीय परम्परा एवं विरासत की सुगन्ध से परिपूर्ण ये स्थल पर्यटक आवास के रूप में पर्याप्त लोकप्रिय हुए हैं और पारम्परिक होटलों की अपेक्षा पर्यटक इनमें रहना पसन्द करते हैं। कुछ स्मारक बड़े होटल मालिकों द्वारा स्वतंत्र रूप से प्रबन्धित हैं तथा कुछ में होटल समूह तथा स्मारकों के स्वामियों की भागीदारी है। कुछ स्वामियों ने किसी भी स्थापित होटल समूह से अनुबंध न करते हुए स्मारक की पारम्परिक शैली को सुरक्षित रखते हुए न्यूनतम आधुनिक परिवर्तनों के साथ उन्हें पर्यटकों के लिए प्रस्तुत किया है।

Scanned with CamScanner

सामान्यत: पारम्परिक होटलों के नियम हेरिटेज होटलों पर लागू नहीं हो सकते क्योंकि इनकी मौलिकता एवं पारम्परिकता ही इनकी पूंजी है और उसे नष्ट नहीं किया जा सकता। अत: 1991 में विरासत होटल के नाम से नई श्रेणी बनाई गई तथा प्रारम्भ में राजस्थान के लिए लागू करते हुए इसे बाद में अन्य राज्यों में भी लागू किया गया।

राजाओं के स्थान के रूप में ही ख्यात राजस्थान प्रान्त को इतिहास की जीवन्त पुस्तक का दर्जा प्राप्त है, जिसके प्रत्येक पन्ने पर ऐतिहासिक गाथाएँ अंकित हैं। राजस्थान के प्रत्येक भाग में स्थित शानदार किलों, महलों तथा हवेलियों में से बहुत से स्मारक हेरिटेज होटलों के रूप में ख्यात हो गए हैं, जिनकी सरंचना, वास्तु, डिजाइन, रूपरंग, आंतरिक सज्जा, भोजन तथा प्रस्तुति सभी कुछ इतिहास को समर्पित है। राजस्थान के प्राय: प्रत्येक शहर में अपनी प्राचीन सुगन्ध को बरकरार रखते हुए भी आधुनिक पर्यटकों की रुचि के अनुकूल स्वयं को समायोजित करते हुए हेरिटेज होटल हैं। राजस्थान पर्यटन विभाग की आधिकारिक सूचना के अनुसार वर्तमान में कुल 115 विरासत सम्पत्तियाँ राजस्थान आने वाले पर्यटकों को राजसी अनुभव से युक्त शानदार आतिथ्य परोस रही हैं।

इनमें से भव्यतम होटल जयपुर, जोधपुर तथा उदयपुर में स्थित हैं। राजधानी जयपुर तथा उसके आसपास स्थित रामबाग पैलेस, सिटी पैलेस, डिग्गी पैलेस, जयमहल पैलेस, नारायण निवास पैलेस, राज पैलेस, रामगढ़ हवेली, अलसीसर हवेली, बिसाऊ पैलेस, चिरमी पैलेस, रॉयल कैसल कानोता, शाहपुरा गार्डन पैलेस तथा साम्मोद पैलेस जैसे हेरिटेज होटल पर्यटकों को अलग ही दुनिया में ले जाते हैं। 18वीं सदी की फ्रांसीसी वास्तुकला पर आधारित जयपुर राजघराने का पूर्व निवास स्थल रामबाग पैलेस स्वयं में अनूठा है, तो आकर्षक 3 स्मारकों की एवं उद्यानों की भव्यता से युक्त सिटी पैलेस अद्भुत है। इसी तरह 1727 ई. में राजा मोहन ठाकुर सिंह द्वारा निर्मित राज पैलेस राजस्थान के भव्यतम हेरिटेज होटलों में से है तो 600 वर्ष पुराना साम्मोद पैलेस अपनी वास्तुकला की दृष्टि से अतुलनीय है।

जोधपुर तथा उसके समीपस्थ स्थलों की बात करें तो उम्मेद भवन पैलेस, अजीत भवन, रतन विलास, ताज हरिमहल, होटल करणी भवन, पाल हवेली, बाल समन्द लेक पैलेस, रणबांका पैलेस, रतन विलास, होटल रास, हेरिटेज कुचामन हवेली, कोर्ट खेजड़ला, बिजोलिया पैलेस आदि क्षेत्र की विरासतीय समृद्धि के प्रतीक हैं।

विश्व के सबसे बड़े निजी महलों में से एक उम्मेद भवन पैलेस 1943 में बनकर तैयार हुआ था। वास्तुकार हेनरी वॉन लॉनचेस्टर ने गुबंदों एवं स्तम्भों से युक्त महल को भारतीय वास्तुकला एवं पश्चिमी प्रौद्योगिकी का सम्मिश्रित रूप प्रदान किया है। महल के एक हिस्से में राजपविार का निवास है व शेष में हेरिटेज होटल संचालित होता है।

Scanned with CamScanner

इसी तरह जोधपुर के पूर्व राजघराने के लिए आदामदायक ग्रीष्म आवास के रूप में 15वीं सदी में कृत्रिम झील में निर्मित बाल समन्द लेक पैलेस पर्यटकों के लिए अद्‌भुत अनुभव प्रस्तुत करता है। 1927 ई. में महाराज उम्मेदसिंह जी के छोटे भाई अजित सिंह जी के लिए निर्मित अजीत भवन को महाराजा स्वरूप सिंह जी तथा रानी उषा देवी द्वारा होटल में परिवर्तित किया गया।

उदयपुर क्षेत्र भी पारम्परिकता और आधुनिकता के तालमेल से पर्यटकों को उत्कृष्ट आतिथ्य प्रदान करने वाले हेरिटेज होटलों से युक्त है। ताज लेक पैलेस, फतह प्रकाश पैलेस, शिव निवास पैलेस, द ललित लक्ष्मी विलास पैलेस, रंग निवास पैलेस, शिकारबाड़ी होटल, आमेट हेवली, कांकरवा हवेली यहाँ आने वाले पर्यटकों को मोह लेते हैं।

ताज लेक पैलेस दुनिया के सबसे रूमानी होटलों में से एक है। पिछोला झील के बीच में सफेद संगमरमर से 18वीं शताब्दी में महाराणा जगत सिंह द्वितीय द्वारा जगनिवास के रूप में निर्मित इस होटल के एक ओर अरावली की पहाड़ियाँ तथा दूसरी ओर उदयपुर शहर है। नाव से वहाँ पहुँचकर प्रकृति का आनन्द उठाना पर्यटकों को रोमांच से भर देता है। इसी तरह महाराणा के शिकार करने की जगह पर बना ओबेराय उदय विलास होटल शहर की सबसे भव्य इमारतों में से है तो अरावली पर्वत के शीर्ष पर स्थापित 108 वर्ष पुराना ललित लक्ष्मी विलास पैलेस राजसी वैभव का जीवन्त प्रतीक है।

पिछोलाझील के किनारे महाराणा फतेहसिंह द्वारा शाही शादियों के लिए निर्मित फतेह प्रकाश पर्यटकों के प्राचीन शाही वस्तुओं, चित्रों और पारम्परिक राजस्थानी चित्रों के अद्‌भुत संसार में ले जाता है।

इसी प्रकार रंग निवास पैलेस महाराणा सज्जन सिंह (1874-84) के शासनकाल में शीतला अष्टमी समारोह तथा उससे जुड़े नृत्य-महोत्सव को देखने के लिए बनवाया गया था। कई जीर्णोद्धार-पुनरुद्धार के बाद 1975 ई. में यह हेरिटेज होटल पूर्व मेवाड़ राजघराने द्वारा ही संचालित किया जाता है।

## हेरिटेज होटल विकास के सरकारी, गैर सरकारी प्रयास एवं परिणाम

पर्यटन गतिविधि को महत्त्वपूर्ण आयाम के रुप में स्वीकारते हुए भारतीय सरकार ने इस ओर पर्याप्त ध्यान दिया। विशेष रूप से 7वीं एवं 8वीं पंचवर्षीय योजनाओं में इसके महत्त्व को स्वीकार किया गया। विरासतीय पर्यटन के दृष्टिगत विरासतीय इमारतों को उत्पादक बनाते हुए उन्हें संरक्षित करने हेतु सर्वप्रथम 1 जनवरी, 1990 को भारत सरकार के पर्यटन एवं संस्कृति विभाग द्वारा विरासतों का श्रेणीकरण किया गया। 1991 में भारत सरकार ने हेरिटेज होटलों को अलग श्रेणी में मानते हुए उन्हें पुनः तीन रूपों—हेरिटेज, हेरिटेज क्लासिक तथा हेरिटेज ग्रांड के रूप में विभाजित किया।

Scanned with CamScanner

इसी के दृष्टिगत 1990 में 'इंडियन हेरिटेज होटल एसोसिएशन' का गठन हुआ, जिसका उद्देश्य हेरिटेज को संरक्षित पुनर्जीवित करते हुए पर्यटन को बढ़ावा देना था। स्वाभाविक रूप से भारत की समृद्ध ऐतिहासिक सांस्कृतिक स्थापत्यगत विरासत की रक्षा के साथ-साथ पारम्परिक कला शिल्प एवं गीत संगीत की रक्षा का भाव भी था। राजस्थान सरकार ने भी इसी दृष्टि का अनुगमन करते हुए इस दिशा में पर्याप्त कार्य किए और हेरिटेज होटलों को प्रोत्साहन दिया।

पर्यटन को राज्य द्वारा नवम्बर, 2015 में दो दिवसीय रिसर्जेन्ट राजस्थान पार्टनरशिप सम्मिट में राज्य सरकार द्वारा निवेशकों को पर्याप्त सहूलियतें दी गईं। करों पर सब्सिडी, विशेष पैकेज, सिंगल विंडो तथा प्राथमिकता पर आधारित क्षेत्र में निवेश पर विशेष लाभ प्रदान करने जैसे सहूलियतें घोषित की गईं। हेरिटेज होटलों में निवेश को एक बड़े आकर्षण के रूप में रखने का प्रयास किया गया जिसके लिए हेरिटेज सम्पत्ति बैंक द्वारा उनका डेटा तैयार कर निवेशकों को आमंत्रित किया गया। आवासीय क्षेत्र में स्थित हेरिटेज इमारतों को हेरिटेज होटल खोलने के लिए लैंड यूज चार्ज एवं विकास शुल्क से भी मुक्त किया गया।

जून, 2016 में पर्यटन विभाग द्वारा जारी हेरिटेज होटल पॉलिसी में हेरिटेज दर्जे से लेकर भू-रूपान्तरण में छूट जैसे कई परिवर्तन किए गए। इनमें 1950 से पूर्व निर्मित भवन को हेरिटेज दर्जे में शामिल किया गया और भवन की आयु प्रमाणित करने का उत्तरदायित्व विशेषज्ञों को दिया गया।

भवन स्वामी को 50 प्रतिशत तक परिवर्तन का अधिकार दिया गया ताकि होटल के अनुरूप आधुनिक साज-सज्जा के साथ उसे तैयार किया जा सके। साथ ही भवन मालिकों को 100 वर्ग मीटर अथवा निर्माण कार्य का 10 प्रतिशत छूट रूपान्तरण शुल्क में दिया गया। संकरे रास्तों की इमारतों पर कम से कम निवेश की बाध्यता को भी हटा दिया गया। 2020 में सरकार द्वारा 'ईज ऑफ ट्रेवलिंग राजस्थान नीति' बनाकर 100 करोड़ रुपये का पर्यटन विकास कोष गठित किया गया। वहीं बजट भाषण 2020 की घोषणा में लेक पैलेस, सिलिसेढ (अलवर), झूमर बावड़ी, रणथम्भौर (सवाई माधोपुर), गोकुल, नाथद्वारा (राजसमंद) तथा होटल सरोवर, पुष्कर (अजमेर) में जीर्णोद्धार संरक्षण एवं विकास हेतु रुपये 4 करोड़ का प्रावधान किया गया।

निःसंदेह इन प्रोत्साहनों के सुपरिणाम भी सामने आए और राजस्थान के हेरिटेज होटल पर्यटकों की आवभगत के नए आकर्षण के रूप में सामने आए। यहाँ के विभिन्न होटलों की वैश्विक छवि बनी और कला, उद्योग तथा खेल जगत के प्रसिद्ध हस्तियों की डेस्टीनेशन वेडिंग के लिए भी वे पहचाने गए। 2017 में जयपुर के ताज रामबाग पैलेस को ब्रिटेन के प्रतिष्ठित ट्रेवल पब्लिकेशन में छठा स्थान मिला। 2009 में भी कान्डे नास्ट ट्रेवल रीडर्स अवार्ड्स द्वारा वह दुनिया के सर्वश्रेष्ठ होटलों में शामिल किया गया था।

Scanned with CamScanner

हेरिटेज होटलों से जुड़ी चुनौतियाँ भी कम नहीं हैं। सबसे प्रमुख चुनौती सरंक्षण से सम्बन्धित है। हेरिटेज सम्पत्तियों का जीर्णोद्धार-पुनरुद्धार कर उन्हें कार्यक्षम बनाने स्वयं में पर्याप्त श्रमसाध्य और अर्थसाध्य प्रक्रिया है। अनेक बार जीर्णोद्धार-पुनरुद्धार की प्रक्रिया में इमारत के मूल विरासतीय स्वरूप को नुकसान पहुँचता है। कभी-कभी उसका मूल स्वरूप पूर्ण रुप से नष्ट हो जाता है। 19वीं और प्रारम्भिक 20वीं सदी में निर्मित यूरोपीय शैली के महलों को हेरिटेज होटल के रूप में परिवर्तित करना सुगम होता है क्योंकि उनमें अतिथि कक्ष, स्वागत कक्ष, भोजन कक्ष, सैलून आदि पहले से ही बने होते हैं। परन्तु पुराने वास्तु के साथ समस्या होती है। उदाहरण के लिए, नीमराणा फोर्ट पैलेस को लिया जा सकता है। 500 वर्ष से भी अधिक पुराने नीमराणा फोर्ट पैलेस के प्रारम्भिक जीर्णोद्धार में मूल स्वरूप का पर्याप्त ध्यान रखा गया, परन्तु बाद में हुए विस्तार में मूल ढाँचा एकदम छुप गया और खुली जगहों पर कमरे बना दिये गए। अधिकांश अतिथिकक्ष आधुनिक शैली में निर्मित हैं और दूसरे सामान्य होटलों जैसे ही हैं। इस तरह इस स्थल की स्थापत्य विशेषता को बिल्कुल नजरअंदाज कर दिया गया।

कई बार वर्तमान पर्यटकों की आवश्यक जरूरतों तथा आधुनिक सुविधाओं—एयर कंडीशनर, सी.सी.टी.वी. आदि के जोड़ने हेतु स्मारकों के मूल स्वरूप से छेड़छाड़ और तोड़फोड़ की जाती है। निस्संदेह किसी भी परिवर्तन के समय स्मारक के विरासतीय तत्व को ध्यान में रखा जाना आवश्यक है।

पारम्परिक होटलों की तुलना में हेरिटेज होटल बहुत से आधारभूत संसाधनों एवं सुविधाओं की कमी अनुभव करते हैं। इनके लिए आवश्यक कुशल तथा प्रशिक्षित स्टॉफ की जरूरतें भी पूरी नहीं हो पातीं। कभी कभी हेरिटेज होटल ऐसी जगह स्थित होते हैं, जहाँ पर्यटकों की पहुँच सुगम नहीं होती है।

लेकिन अपनी बहुत सी अन्य और विशिष्ट खूबियों से हेरिटेज होटल इन चुनौतियों से भी पार पाने में सक्षम होते हैं। अपनी विशिष्टम वास्तुकला, विशिष्ट माहौल और विशिष्ट इतिहास के साथ ये होटल अतिथियों को बेहतर आतिथ्य के साथ स्मरणीय ऐतिहासिक अनुभव को जीवन्त करने का सुख उपलब्ध कराते हैं जो स्वयं में अद्‌भुत है। ऐसे बहुत से होटलों के एक हिस्से में अभी भी उनके मालिक पूर्व राजा महाराजा निवास करते हैं, जिससे एक ओर पर्यटकों को व्यक्तिगत आवभगत प्राप्त होती है, वहीं दूसरी ओर इतिहास का प्रत्यक्ष दर्शन संभव हो पाता है।

निःसंदेह राष्ट्र की पुरातन विरासतों को संरक्षित-सुरक्षित करते हुए आर्थिक विकास को गति दे पाने के साथ-साथ सांस्कृतिक संवाहक के रूप में भी हेरिटेज होटलों की भूमिका अविस्मरणीय है।

Scanned with CamScanner

## सन्दर्भ-ग्रन्थ

1. egyankosh.ac.in>unit31, p. 36
2. egyankosh.ac.in>unit31, p. 14
3. इग्नू, टी.एस.-2, पाठ्यक्रम, पर्यटन विकास : उत्पाद संचालन एवं स्थिति, अध्याय, खंड 8, इकाई 31, पृ. 46
4. ए.के. श्रीमाली, भरतपुर का इतिहास, पृ. 3
5. दैनिक भास्कर, 5 मई, 1997
6. डी.आर. मांकेकड़, मेवाड़ सांगा : द सिसोदियाज रोल इन इंडियन हिस्ट्री, विकास पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, पृ. 179
7. राजस्थान सुजस, जून-सितम्बर, 2000
8. इग्नू टी.एस. 2, पर्यटन विकास : उत्पाद संचालन और स्थिति अध्ययन, खंड-8, इकाई 31, पृ. 47
9. Error! Hyperlink reference not valid. property
10. indianheritagehotels.com, www.acronymjinder.com>hha
11. नवभारत टाइम्स, 3 जनवरी, 2018
12. बजट भाषण, राजस्थान सरकार, 2020
13. इग्नू टी.एस. 2, पर्यटन विकास : उत्पाद संचालन और स्थिति अध्ययन, खंड-8, इकाई-31, पृ. 52
14. डॉ. प्रतिभा, राजस्थान में ऐतिहासिक पर्यटन की पहचान और सामाजिक-सांस्कृतिक परिवेश: एक मूल्यांकन शीर्षक, यू.जी.सी. वृहत् अनुसंधान परियोजना रिपोर्ट, 2011, पृ. 117

❑❑❑

Scanned with CamScanner